॥ ओ३म् ॥

" आर्य समाज से लेखनी व वक्तव्य का कार्य बन्द न हो। "
(धर्मवीर पं. लेखरामजी आर्य मुसाफिर)

हृदय-तन्त्री

— रचयिता —

राजेन्द्र जिज्ञासु

— प्रकाशक

आर्य समाज, गुंजोटी.

आर्य समाज, औराद.

ता - उमरगा, जिला- धाराशिव,

(मराठवाडा)

मूल्य ४० नये पैसे

= दो शब्द =

मुझे छन्द शास्त्र का ज्ञान नहीं फिर भी पद्यरचना करता हूँ। हृदय की भावनायें मुझे ऐसा करने पर विवश करती हैं। आर्य समाज में युवक-उपयोगी काव्य की कमी मुझे खटकती है। 'क्षमा अपराध कर मेरे' व 'झूठे जग की झूठी माया' जैसे वेद विरुद्ध पद भी मुझे चुभते हैं। पाठक हृदय-तन्त्री में ओतप्रोत हृदय की तड़प से अनुप्राणित हो कर चेतन्य होंगे इस आशा से इसका प्रकाशन किया जा रहा है। कविता की त्रुटियों की उपेक्षा की जाये तो आभारी हूंगा।

स्थान अभाव के कारण आर्य समाज के कई तपस्वी निर्माताओं व हुतात्माओं के सम्बंध में इस संग्रह में भजन नहीं दिये जा सके। दक्षिण के सर्व प्रथम आर्य समाजी हुतात्मा श्री वेद प्रकाश जी (गुंजोटी) व दक्षिण के लेखराम अमर हुतात्मा भाई श्यामलाल जी वकील की पावन स्मृति में हृदय-तन्त्री प्रकाशित कराने के लिये आर्य समाज गुंजोटी व औराद का मैं कृतज्ञ हूँ। सावधानी से ' करने के लिये आर्य प्रेस के संचालक श्री अशोक जी आर्य क धन्यवादी हूँ।

भाई श्यामलाल बलिदान पर्व
१६-१२-६४

विनीत—
राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
दयानन्द महाविद्यालय, शोलापूर.

ओ३म्

– भूमिका –

मैं और किसी काव्य की भूमिका लिखना ये बातें विरोधात्मक आश्चर्य की हैं। मैं न छन्द शास्त्र जाननेवाला न काव्य पढ़नेवाला न काव्य का रसिक, किन्तु श्रद्धेय पं. (प्राध्यापक) जिज्ञासु जी की प्रेम पूर्वक आज्ञा से काव्य की भूमिका लिखने का भार मुझे उठाना पड़ रहा है। कदाचित मैं पंडित जी के काव्य का ठीक ठीक मूल्यांकन पाठकों के सामने न रख सकूंगा। किन्तु अच्छे रसिक अवश्य इस काव्य का ठीक रसास्वाद लेंगे ही।

श्रद्धेय पंडित जिज्ञासु जी एक ज्वलन्त विचार धारा के प्रतिभावान कवि हैं। इस के पहिले भी इनके गीत संग्रह तथा कुछ ट्रॅक्ट प्रकाशित हो चुके हैं। कवि के हृदय में धर्म तथा राष्ट्र के प्रति अटूट प्रेम का सागर सदैव उमडता रहता है। धर्म तथा राष्ट्रपर बलि जानेवाले हुतात्मा कवि के देवता हैं। उनका जीवन कविका प्रेरणा स्रोत है तथा उनकी जन्म भूमि कवि के लिए तीर्थ है। ध्येय के दीवाने कवि मस्ताने बनकर सीना ताने अपने पथपर जा रहे हैं। वे रुकना झुकना क्या जाने ? अन्याय तथा अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए कवि की लेखनी तीक्ष्ण शस्त्र धारण करती है। सोतों को जगाने के लिये मन में आग धधक उठती हं। दुनिया के अनेकों संकटों को सहकर भी वह आग सोतों को अवश्य जगायगी। अपनी लेखनो के द्वारा वेद ज्ञान की ज्योति फैलाकर अज्ञानांधकार को नष्ट करने में कवि कटिबद्ध दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत काव्य संग्रह के कई गीत गेय होने से नगर कितंन में गाये जा सकते हैं। आशा है इसका लाभ उठाया जायेगा। आशा ही नहीं मुझे पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत काव्य संग्रह से महाराष्ट्र भूमि के नौजवानों में वैदिक धर्म तथा राष्ट्र के प्रति अटूट श्रद्धा निर्माण होगो, और निश्चय ही वे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद पं. लेखराम आर्य पथिक भाई शामलाल जी तथा वेद प्रकाश जैसे अनेकों हुतात्माओ की ज्योति से अपनी जीवन ज्योति जगा लेंगे।

विनीत

हरिश्चंद्र रामराव जी सूर्यवंशी

प्रधान, आर्य समाज, औराद

ता.–उमरगा, जि.– धाराशिव, (उस्मानाबाद)

अगर तुम दयानंद को जानते हो

उठो आर्य वीरो, धरा तड़पती है।
घिनौनी घटा पाप की गर्जती है।।
जवानो, जवानी के जौहर दिखाओ।
उठो धूर्तों को धरा से मिटाओ।।
उठो आग दिल में अगर धधकती है –

जवानो जवानी रहेगी अविकसित।
जो निश्चय तुम्हारे रहेंगे अनिश्चित।।
उठो आज रग रग अगर फड़कती है –

विषय वासना विश्व को खा रहे हैं।
भवन भाग्य का अपना हम ढा रहे हैं।।
उठो देख लो शिष्टता झुलसती है –

अगर धमनियों में लहू राम का है ?
अगर मान कुछ कृष्ण के नाम का है ?
तो क्यों आस जननी की फिर तरसती है –

अभी दम नहीं जाति पाँती ने तोड़ा ।
अभी तक नहीं फूट ने हम को छोड़ा ।।
अंधेरे में दुनिया अभी भटकती है –

मजे से अभी जोतिषी ठग रहे हैं ।
अभी दीप कबरों में भी जग रह हैं ।।
अविद्या अभी झूमती मटकती है –

अभी भय नहीं राहु केतु का भागा ।
अभी तक नहीं विश्व सोया यह जागा ।।
दनुजता धरा पर अभी कड़कती है –

अभी तक है सपना ऋषि का अधूरा ।
कोई काज भी कर सके हम न पूरा ।।
महानाश की दामिनी दमकती है –

अगर तुम दयानंद को जानते हो ?
अगर वेद पावन को तुम मानते हो ?
तो क्यों फिर मुसाफिर की चाह सिसकती है ?–

जगती को आज जरुरत है। ✓

जगती को आज जरुरत है उन आर्य वीर जवानों की
जिन के उर में है आग लगी जिन के जीवन में मस्ती है।
तन मन जिनका बस डोले न जिन की धरती में हस्ती है ।।
बिन सोचे जो शुभ कर्म करें, उन वीरों की दीवानों की –

भय भीत न हों जो मृत्यु से, सच्चे ईश्वर विश्वासी हों।
जो संकट में घबरायें न, दुःख सुख के जो अभ्यासी हों ।।
ऐ वीरो ! आज जरुरत है, 'बिस्मिल' से फिर परवानों की–

जो ऐक्य भाव को लेकर के, मानव को खूब झंझोड सकें।
अज्ञान, अविद्या की गर्दन, निर्मम बन तोड़ मरोड सकें ।।
धरती को आज जरुरत है, ऐसे अद्भुत विद्वानों की –

जिन को हो गर्व जवानी पर, जो रण में गर्जन कर सकते।
झट चीर कलेजा अडचन का वे वीर जो आगे बढ सकते ।।
धरती को आज जरुरत है, उन गुणवानों बलवानों की –

साथ चले जो दीवाना है

किसने मस्तों को जाना है ?
किसने इनको पहचाना है ?
इनका है संसार निराला
इनमें है इक जीवन ज्वाला
इनको विपदाओं ने पाला
बोलो किसने टकराना है ?

संकट में मुस्काने वाले
जीवन भेंट चढ़ाने वाले
मौत से जीवन पाने वाले
इन का नारा मस्ताना है

काँटों पर ये चलने वाले
अंगारों पर जलने वाले
निश्चय से न टलने वाले
साथ चले जो दीवाना है

दूर रहे जो घबराता है
जो झंझट में झुंझलाता है
जो उलझन में चिल्लाता है
जिसने रोना पहचाना है

जय स्वामी श्रद्धानन्द की

मिल कर के सब गाओ, जय स्वामी श्रद्धानन्द की।

नाम सरस और सुन्दर प्यारा, जीवन जनहित जिसने वारा॥

वैदिक नाद बजाओ –

कर्म वीर प्यारा सेनानी, धर्म वीर साधु बलिदानी।

आओ शिक्षा पाओ –

दुर्व्यसनों को जिसने छोडा, घातक जाति बंधन तोडा॥

जीवन स्वच्छ बनाओ –

प्यासे को जिस खून पिलाया, दानव दल जिससे घबराया॥

पावन पर्व मनाओ –

सीने पर जिस खाई गोली, जिसकी जयजय दुनिया बोली॥

जीवन ज्योति पाओ –

साहस संयम निश्चय वाला, अरमानों की भीषण ज्वाला॥

वही उमंगें लाओ –

जय स्वामी श्रद्धानंद की।

जय बोलो श्याम भाई की

जय बोलो बहिन भाई, जय बोलो श्याम भाई की ।।
प्राणों का निर्मोही प्यारा ।
भारत माँ का राजदुलारा ।।
जीवन की आग लगाई –

धर्म वीर सच्चा सेनानी । कर्म वीर पावक बलिदानी ।।
उस वंशी वेद बजाई –

संकट सहकर भी मुसकाया । सोतों को झंझोड़ जगाया ।।
सरकार भी घबराई –

देशभक्त आदर्श तपस्वी । परम यशस्वी वीर मनस्वी ।।
फूंक गया तरुणाई –

वेद निष्ठ ईश्वर विश्वासी । पाप दम्भ पाखण्ड विनाशी ।।
वीरों की मृत्यु पाई –

अन्यायी से भिड़ने वाला । डटकर रण में अड़ने वाला ।।
ज़ालिम ने ज़हर पिलाई–

युवकों को रणशूर बनाया । मृत्यु का भय दूर भगाया ।।
जीवन सुधा पिलाई –

दीन दुखी का बना सहारा । तिल तिल जल कर जीवन वारा ।।
जाति ने ली अंगड़ाई । जय बोलो श्याम भाई की –

जय बोलो दयानन्द की

मिलकर के नर नारी, जय बोलो दयानंद की

जिसने ईश्वर भक्त बनाया ।

जिसने वैदिक धर्म बचाया ।।

हम उस पर बलिहारी–

वेदों का जिस किया उजाला । जाति में जिस जीवन डाला ।।

वही बाल ब्रह्मचारी–

ऊँच नीच का भाव भगाया । प्रीति रीति का पाठ पढाया ।।

वह सब का हितकारी–

आज़ादी की तान सुनाई । भारत माँ की शान बढाई ।।

वह संयम साहस धारी–

श्यामलाल सर्वस्व लुटाया । 'बिस्मिल' रोशन शीश कटाया ।।

यह जाने दुनिया सारी–

ललनाओं की सुनी दुहाई । शुद्धि की फिर रीत चलाई ।।

गाय बनी महतारी–

आर्य समाज है

जग को जगाने वाला आर्य समाज है।
जग की पुकार है व युग की आवाज है ।।
ईश की उपासना का रास्ता दिखा दिया।
जड़ की आराधना के पाप से बचा लिया ।।
ढोंग ढांग जिस के भय से डोल रहा आज है–

ठाकुरों की ठोकरों ने कर दिया बेहाल था।
दम्भियों का फैला हुआ ओर छोर जाल था ।।
जिसने दीन देश जाति की बचाई लाज है–

नारियाँ भी वेद का हैं आज गान कर रही।
रूढ़ियाँ कुरीतियाँ हैं अपने आप मर रही ।।
वेद के प्रकाश का जो कर रहा सुकाज है–

कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया।
कौन मौत से हमें जो जूझना सिखा गया ।।
श्रद्धानन्द, लेखराम प्यारा हंसराज है–

देश हित में वार दीं अनेक ही जवानियाँ।
रक्त से लिखी हैं इसने देश की कहानियाँ ।।
लाजपत लुटा के आज पा लिया स्वराज है–

कौन भोगवाद से जो विश्व को बचायेगा।
पाप पुण्य क्या है कौन आज यह सुनायेगा ।।
मानवीय रोग का तो एक ही इलाज है।
जग को जगानेवाला आर्य समाज है ।।

सोतों को आज जगायेंगे

धरती के ताप मिटायेंगे ।
सोतों को आज जगायेंगे ॥

सीने में है इक आग लगी ।
मन में है वैदिक ज्योति जगी ॥
मानव का मान बचायेंगे —

हम नही ढोंग को सह सकते ।
चुपचाप नहीं हम रह सकते ॥
सारा अज्ञान मिटायेंगे —

न खंजर और कटारों से ।
न दो-धारी तलवारों से ॥
न तोपों से घबरायेंगे —

न मौत से डरने वाले हैं ।
भाले भी देखे भाले हैं ॥
विपदा को नाच नचायेंगे —

ठगों का आसन डोलेगा ।
दुखियों का हृदय बोलेगा ॥
यह कर के काज दिखायेंगे —

ईश्वर की प्यारी वाणी का ।
वैदिक शिक्षा कल्याणी का
घर घर में गान सुनायेंगे ।
सोतों को आज जगायेंगे ॥

हम रुकना झुकना क्या जानें

हम रुकना झुकना क्या जानें ।
हम बढ़ते हैं सीना ताने ।।
हम सैनिक वीर शहीदों के ।
परहित में जिन के शीश कटे ।
हम दयानंद के दीवाने —

जो गया राज में नेहरू के
हम वीर हैं वीर सुमेरू के ।
हम वेद ज्योति के परवाने —

हम हँस हँस के दुःख झेलेंगे ।
सर्वस्व धर्म पर दे देंगे ।।
ये लेखराम से मस्ताने —

हम कर्म वचन के सच्चे हैं ।
हम धुन अपनी के पक्के हैं ।।
सब दुनिया ही हम को जानें —

दुःख आता है तो आने दो ।
सुख जाता है तो जाने दो ।।
हम वीर हैं डरना क्या जानें —
हम रुकना झुकना क्या जानें —

पाप से लडते चलेंगे

हम ऋषि के शिष्य है तन तान कर चलते चलेंगे ।
यह न सोचो राह हमारी आज अंधड़ रोक लेंगे ।
यह न सोचो हमको विपदा के सघन बन टोक लेंगे ।।
हम मनोबल से अहर्निश लक्ष्य तक बढते चलेंगे –

भय हमें किस बात का हम राम की सन्तान है ।
हम अटल ध्रुव धर्मधारी जन्मना तूफान हैं ।।
प्रणियों की पीर को हम चीर कर हरते चलेंगे –

हम को वीरों का शहीदों का लहू ललकारता ।
पाप धरती पर घृणा से घूरता हुंकारता ।।
रौंद कर के आततायियों को विजय करते चलेंगे –

विश्व में शीतल विमल फिर सत्य सरिता ही बहे ।
हों सरस सानन्द प्राणी छल कपट जाता रहे ।।
हृदयों में हम अनुपम भावना भरते चलेंगे –

महात्मा हंसराज

विद्या की दिव्य ज्योति तू ने यहाँ जलाई ।
अज्ञान की यहाँ मे तू ने निशा भगाई ॥
गुण ज्ञान त्याग तेरा धन मान कौम का है ।
उज्वल चरित्र तेरा अभिमान कौम का, है ॥
भव भोग मृत जाति तू ने तरुण जिलाई –

पीड़ित दुखी की सेवा करता रहा सदा तू ।
जाति हितों की खातिर लड़ता रहा सदा तू ॥
कितने दिलों मे तूने ऐसी लगन लगाई –

लोकैषणा पदों की इच्छा विसार दी थी ।
दिन रात एक चिन्ता जाति सुधार की थी ॥
लुटती अनाथ जाति सब कुछ लुटा बचाई –

सब ये चरित्र तेरा निष्ठा से आज धारें ।
आर्य समाज खातिर धनमान जान वारें ॥
रोती मनुष्यता की सुन लें पुनः दुहाई –

लोभी न कोई कायर लीडर बने हमारा ।
हो शूर वीर दल ही आर्य समाज प्यारा ॥
ऊँची ध्वजा उठायें, तू ने थी जो उठाई –

वेद प्रकाशजी

सदा याद तेरी मनाते रहेंगें ।
धरा वासियों को सुनाते रहेंगे ।
अमर तुम हुए सिर कटा कर के अपना ।
बचाया हमें घर लुटा करके अपना ।
यह निष्ठा से सिर हम झुकाते रहेंगे –

लिखी रक्त से है तुम्हारी कहानी ।
सफल वेद प्यारे तुम्हारी जवानी ।
सदा प्रेरणा लोग पाते रहेंगे –

कटा कर के सिर सिर उठाना सिखाया ।
दयानन्द का हमको सैनिक बनाया ।।
तुम्हारा यशोगान गाते रहेंगे –

गया जालिमों का निजामी जमाना ।
निजामी हकूमत बनी इक फिसाना ।।
विजय घोष तेरा लगाते रहेंगे –

रंगी रक्तसे यह शहीदों की प्यारी ।
शहीदों ने जिसके लिए जान वारी ।।
ध्वजा ओ३म् की यह झुलाते रहेंगे –

यहाँ लाज बहिनों की तू ने बचाई ।
नई आग दक्षिण में तू ने लगाई ।।
यह कृतज्ञ 'जिज्ञासु' गाते रहेंगे –

अमर धर्म वीर लेखरामजी

जय शूर वीर जय धर्म वीर जय जय हो सच्चे सेनानी ।
जय जय प्राणों के निर्मोही जय जय वैदिक पथ अनुगामी ॥

जय अलबले जय दीवाने जय देश धर्म के मस्ताने ।
जय प्राणवीर जय कर्मवीर जय मृत्युंजय जय बलिदानी ॥

जय वीरव्रती जय ज्योति पुञ्ज जय आर्य जाति के गौरवधन ।
जय तपोनिधि जय विप्र गुणी जय जय हो सच्चे स्वाभिमानी ॥

तेरे उर में इक ज्वाला थी तेरे जीवन में आभा थी ।
हे लोह लेखनी के लेखक तेरी ब्राह्मण अद्भुत वाणी ॥

गर्जन में तेरी जादू था शब्दों में तेरे जीवन था ।
तेरी गतियों में सौरभ थी तेरी तरुणाई मस्तानी ॥

छुरियों की छाया में रहकर सन्देश सुनाया स्वामी का ।
प्राणों से तुझ को प्यारी थी वेदों की वाणी कल्याणी ॥

इक पूत जिगर का टुकडा था 'सुखदेव' भी अपना वार दिया ।
कर याद कहानी यह तेरी नयनों में आता है पानी ॥

वैरी कायर ने समझा था फूकों से दीप बुझा दूंगा ।
पर ज्वाला थी यह धधक उठी जीवन तेरे से बलिदानी ॥

राह पर है तेरी धर्म वीर जीवन 'जिज्ञासु' वारेंगे ।
अज्ञान तिमिर को चीरेंगे बोलेगी जन जन की वाणी ॥

उपासक बना लो

सुधा प्रेम की हे सुधाकर पिला दो ।
हमें अपना सच्चा उपासक बना लो ।।
हमें न किसी से कभी भय प्रभो, हो ।
सदा तेरे भक्तों की जय जय प्रभो, हो ।।
प्रभो, हीन भावों से हम को बचा लो...

करो ज्ञान का मन भवन में उजाला ।
धधकती हो जीवन में जीवन की ज्वाला ।।
प्रभो, सुप्त शक्ति हमारी जगा दो -

तुझे हर्ष में शोक में हम न भूलें ।
पिता प्यार की तेरी गोदी में झूलें ।।
मति शुद्ध माता हमारी बना दो-

सदा वेद के हम मधुर गीत गायें ।
श्रुति गान से सब दिशायें गुंजायें ।।
लगन यह प्रभु, हम सभी को लगा दो-

प्रभु वेद के भेद समझें सभी हम ।
कुपंथों में ईश्वर, न भटकें कभी हम ।।
प्रभो, भाव भद्द हमारे मिटा दो-

विमल वेद धारा धरा पर बहावें
दुःखी दीन को हम गले से लगावें ।।
हमें प्रेम से देव रहना सिखा दो ।
सुधा प्रेम की हे सुधाकर, पिला दो ।।

-: जीवन सुधारिये :-

दयावान दयानिधि दया से निहारिये ।

कष्ट, और पाप-ताप हमें न सतावें नाथ ।

जागृति व चेतना का नित्य रहे नाथ साथ ।।

भावना यह भव्य प्रभु, मन में उभारिये -

सायं प्रात: करें हम संध्या व उपासना ।

नियमित जीवन हो इतनी है याचना ।:

देव, दुराचार सारा जड से उखाडिये -

पथभ्रष्ट हों न हम दूर करो, सारे भ्रम ।

जीवन में लावें हम सारे यम और नियम ।।

दीनबंधु, दुःख सारे धरती के टारिये ।

दयावान दयानिधि, दया से निहारिये ।।

सारा जहान तेरा

सारा जहान प्यारे तेरा निशान प्यारा ।
माता पिता सखा तू बंधु भी तू हमारा ।।
हैरान कर रही है रचना तुम्हारी न्यारी ।
प्यारी कला तुम्हारी यह देव सृष्टि सारी ।।
देती पता तुम्हारा झरनों की देव धारा-

नालों का साफ पानी ऊधम मचा रहा है ।
शक्ति तुम्हीं से पाकर पत्थर बहा रहा है ।।
वायु में वेग तेरा बल जल में है तुम्हारा-

आकाश का पडोसी पर्वत शिखर सुहाना ।
नदियों का नाद दैवी कल कल यह जल तराना ।।
गा गोत मीत तुझ को लहरों ने है पुकारा-

भू पर विभु, बिछाया यह घास का बिछौना ।
बन को बनाया तूने ईश्वर, अजब खिलौना ।।
हिम आ रही गिरि से यह देखने नजारा-

जड में यह चेतना का फूंका है प्राण तूने ।
इन कूदते जलों में डाली है जान तूने ।।
भानु की रश्मियों में तेरा है तेज सारा ।
सारा जहान प्यारे तेरा निशान प्यारा ।।

कोई जाने या न माने

दयामय देव हम जीवन विमल अपना बना लेवें ।
प्रभु, सन्ताप धरती के सभी मिलकर मिटा देवें ।।
जलाओ ज्ञान की ज्योति प्रभु, मन में अंधेरा है ।
प्रभु, दिन रैन पापों का यहां रहता बसेरा है ।।
यह मन भगवान हम बलवान भक्ति से बना लेवें—

बने निर्भीक वैदिक धर्म के हम देव, दीवाने ।
करें सब का भला भगवन् कोई जाने या न माने ।।
आडम्बर आज जड़ पूजा का हम जडसे हिला देवें—

सुनावें वेद की घर घर अमर प्रीतम मधुर वाणी ।
हमें प्राणों से है प्यारी अमर वाणी यह कल्याणी ।।
यही रस्ता है जन कल्याण का सब को बता देवें—

प्रभु, आये शरण तेरी भगाओ भय सभी भगवन् ।
बने बलवान हम भगवान् यह ऊंचा करें जीवन ।।
धरा पर आज प्रीतम प्रेम की गंगा बहा देवें—

ईश वन्दना

प्रभु, हम विमल शुद्ध जीवन बनावें ।
तुझे मन के आसन पै प्रीतम बिठावें ।।
रमा देव तू पत्ते पत्ते के अन्दर ।
प्रभु, मन बने तेरी पूजा का मन्दिर ।।
स्तुति से तुझे नित्य प्रीतम, रिझावें—

मधुर गान गाती गरजती घटायें ।
यशोगान करती हैं तेरा हवायें ।।
तू मन में है, बाहर से क्यों कर बुलावें—

सकल विश्व वश में है तेरे विधाता ।
सदा जागते हो प्रभु, जन्मदाता ।।
तुझे जीव अल्पज्ञ क्या हम जगावें—

प्रभु विश्व सारा रचाया है तूने ।
सभी प्राणियों को बनाया है तूने ।।

प्रभु सरस जीवन यह अपना बनावें ।
प्रभु हम विमल शुद्ध जीवन बनावें ।।

प्रेम का आवास

मन सदन में हे दयामय दिव्य ज्योति को जगाओ ।
देव हम अल्पज्ञ हैं कल्याण पथ हम को दिखाओ ।।
हम विह्वल व्याकुल व्यथित कर्तव्य पथ से हट रहे हैं ।
अपनी भूलों ही के कारण आप से हम कट रहे हैं ।।
सान्त्वना सद् प्रेरणा से आज हम सब को सजाओ–

हे प्रभु, संघर्ष में साहस हमारा मन्द न हो ।
आप को वृष्टि दया की हे दयामय बन्द न हो ।।
हे प्रभु, संकल्प शक्ति नित्य भक्तों की बढाओ–

हे पिता, उर में हमारे प्रेम का आवास हो ।
धर्म वैदिक पर हमारा दृढ अटल विश्वास हो ।।

ज्योति पुञ्ज सर्वज्ञ ईश्वर दूर सब संशय भगाओ ।
मन सदन में हे दयामय दिव्य ज्योति को जगाओ ।।

सिखा दीजिये

देव जगती में जीना सिखा दीजिये। स्वच्छ बुद्धि हमारी बना दीजिये ।।
मिल के संध्या हवन नित्य करते रहें। यह लगन हम सभी को लगा दीजिये
जन्म भूमि के हम कष्ट हरते रहें। हम को निर्भय प्रभुवर बना दीजिये ।।

ज्ञान विद्या से भगवन हमें प्यार हो।
लोक सेवा की वृत्ति जगा दीजिये ।।

पीड़ा दुखियों की हम को सताती रहे।
ऐसी अग्नि हिये में में लगा दीजिये ।।

मातृभूमि पुकारे प्रभो, जब हमें।
देश पर सिर कटाना सिखा दीजिये ।।

प्राण देकर भी प्रण देव पूरा करें।
ऐसी संकल्प शक्ति पिता, दीजिये ।।

वेद आदेश जीवन में धारण करें।
प्रेम गंगा दिलों में बहा दीजिये ।।

कल्याण करो, उत्थान करो

भगवान हमारे जीवन का उत्थान करो, उत्थान करो।
वरदाता याचक द्वार खडे कल्याण करो, कल्याण करो ॥

दुर्गुण दुर्बलता दूर करो हृदय में भाव अनूप भरो।
हे भगवन्, भाग्य हमारे का निर्माण करो निर्माण करो ॥

व्रतधारी वीर विनीत बनें हम कर्मठ और पुनीत बनें।
यह इच्छा हम सब की पूरी भगवान करो भगवान करो ॥

हृदय निर्वैर विशाल करें धरती के हम सब ताप हरें।
मन ज्योतित ज्योतिर्वान करो कल्याण करो कल्याण करो ॥

भगवान, हमारे जीवन का उत्थान करो, उत्थान करो–

हम ने ध्येय धाम विसार दिया

नर जीवन पाकर के हम ने जग में ध्येय धाम विसार दिया।
फंस गये धंस गये हम विषयों में पर प्रीतम से न प्यार किया ॥

कुछ अटक गये कुछ भटक गये मन मानी रीत चला कर के।
दुःख पाते हैं व पायेंगे हम वेद व ईश भुला कर के ॥

क्यों आये थे क्या करना है हम ने न सोच विचार किया–

ईश्वर ने हमें बनाया है हम ईश्वर रोज बनाते हैं।
पत्थर का ईश बना कर के उस का उपहास उडाते हैं ।।
हर कंकर शंकर मान लिया उलटा जग में व्यवहार किया–

आहार हमारा बिगड़ गया परिवार हमारे बिगड गये।
सन्तान हमारी बिगड गयी आचार हमारा बिगड़ गया ।।
शिक्षा बिगडी हम भी बिगडे बिगडी का ही विस्तार किया–

जो बनते ईश उपासक हम वेदों की शिक्षा पर चलते।
दिन रैन जागते हम रहते दानवदल हमको न दलते ।।
न मानी देव दयानन्द की दुष्टों का न संहार किया–

जो तडप उठे जन पीडा से वह सच्चा मुनि मनस्वी है।
जो राख रमा कर आग तपे वह भी क्या खाक तपस्वी है ।।
जड पूजा कर निस्तेज हुअे ईश्वर का न आधार लिया–

अपनी भी पहचान करो

मानव यह जीवन पाया है तो अपनी भी पहचान करो।
शुभ चिन्तन कर के ईश्वर का नर जीवन का उत्थान करो ।।
घर घाट सजा कर रखा है इस मन को कभी सजाया न।
हो जीवन कैसे मधुर विमल जब जीवन सरस बनाया न ।।
बढ चढ कर के शुभ कर्म करो इस जगती का कल्याण करो–

दुर्व्यसनों को तुम दूर करो शुचिता का व्रत लो जीवन में।
फिर प्रेम विनय के फूल खिले सृष्टि के सुन्दर उपवन में॥
पाकर के दैवी शक्ति को तुम मानवता का मान करो–

बलवान मनस्वी वीर बनो दृढ धीर बनो न वीर डरो।
मन शुद्ध विनीत करो अपना बुद्धि न हीन मलीन करो॥
जीवन को सफल बनाना है तो ईश्वर का गुण गान करो–

तुम ईश उपासक बन कर के जग में जीवन संचार करो।
कर धारण वैदिक शिक्षा को सब तापों का उपचार करो॥
'जिज्ञासु' आर्य बन कर के तुम जीवन का निर्माण करो–

वेद महिमा व आर्य समाज

– हमारा धर्म –

वेद अनादि ज्ञान धर्म हमारा है।
उत्तम शिक्षा यह कल्याणी। यह प्रीतम की प्यारी वाणी॥
नित्य ज्ञान की खान धर्म हमारा है–
भेद भाव को दूर भगाता। मानवता का पाठ पढाता॥
मुक्ति का सोपान धर्म हमारा है–

लोक और परलोक सुधारे । जन जन में सदभाव उभारे ॥
दुर्जन बनें सुजान धर्म हमारा है–

दयानन्द का नाद यही है । ऋषियों की आवाज यही है ॥
पीड़ित पावें त्राण धर्म हमारा है–

हंसराज आदेश यही है । श्रद्धानंद उपदेश यही है ॥
लेखाराम की जान धर्म हमारा है–

धरा धाम से पाप मिटावें । दुखियों के सन्ताप मिटावें ॥
गूंजे सकल जहान धर्म हमारा है–

रामकृष्ण इसपर बलिहारी । वेद जवानी प्यारी वारी ।
श्यामलाल की आन धर्म हमारा है–

यह शिक्षा कल्याणी

पढ लो वेद की वाणी जो सुख पाना है ।
परमेश्वर से प्रेम बढाओ । आओ मन की मैल मिटाओ ॥
यह शिक्षा कल्याणी जो सुख पाना है–

प्रातः जागो करो स्नान । आसन करके बनो जवान ॥
काबू करो जवानी जो सुख पाना है–

फल कर्मों का कभी न टलता । पक्ष कभी न ईश्वर करता ।।

करलो याद जवानी जो सुख पाना है–

जादू टोने कबरें छोडो । युग की उलटी धारा मोडो ।।

छोडो सब मनमानी जो सुख पाना है–

मात–पिता का कहना मानो । देश उठाओ वीर जवानो ।।

रीति यही पुरानी जो सुख पाना है–

प्यारा आर्य समाज

अपना प्यारा आर्य समाज । मानवता का रक्षक आज ।

पावन नित्य वेद को माने । दुनिया सारी इसको जाने ।।

ऋषि मुनियों की राखो लाज –

इस ने भय भ्रम सकल भगाये । कल्पित कृत्रिम भेद मिटाये ।।

तोडे गन्दे रीति रिवाज –

जगहितकारी विश्व सुधारक । तिमिर विनाशक ज्ञान प्रसारक ।।

परोपकार मुख्य है काज –

जीवन ज्योति इससे पाई । इसने जीवन सुधा पिलाई ।।

दिल में होता यही निनाद ।

अपना प्यारा आर्य समाज ।।

महर्षि की वाटिका

विश्व के कल्याण हेतु था हुआ निर्माण जिसका ।
ज्ञान देकर के शहीदों ने बढाया मान जिसका ।।
सन्त श्रद्धानन्द ने जिस के लिये सर्वस्व वारा ।
स्वामी वेदानन्द का उद्यान वह प्राणों से प्यारा ।।
गायें गौरव गान हम भी हंस गाया गान जिसका –
जिसकी गोदी में पले थे लाजपत से दिल जले ।
जिस नें वीरों में भरे हैं जिन्दगी के वलवले ।।
प्राण जीवन है सुपावन वेद का सत्ज्ञान जिसका –
फूलसिंह ने सिर कटाया जिसके झण्डे के तले ।
महर्षि की वाटिका प्यारी सदा फूले फले ।।
वीर वर 'आर्य प्रवर' को रात दिन था ध्यान जिसका –

तेरा ऋण कैसे चुकाऊँ ?

व्यक्त कर सकता नहीं मैं तुझसे जो कुछ मात पाया ।
प्रेरणा से मात तेरी पग सदा आगे बढाया ।।

मात चरणों पर तुम्हारे शीश मैं अपना निवाऊँ ।
तेरा ऋण कैसे चुकाऊं ?

तेरी खातिर कष्ट सहकर भी सदा आनन्द पाऊं ।
जूझ कर मैं झंझटों से, खिलखिलाकर मुस्कराऊं ॥
पुण्य वेदी पर तुम्हारी, जन्म जीवन सब लुटाऊं ।
तेरा ऋण कैसे चुकाऊं ?

विश्व की सब वेदना मां, वेद विद्या से मिटा दूं ।
सुख के सूर्य को ढकी, काली घटाओं को हटा दूं ॥
प्यारी महतारी तुम्हारी धूम मैं जग में मचाऊं ।
तेरा ऋण कैसे चुकाऊं ?

तुझ से पाया प्राण जीवन, अजब धुन मन में समाई ।
बुझ नहीं सकती कदापि ज्योति जो तू ने जगाई ॥
झूम कर मस्ती से माता तेरे गौरव गीत गाऊं ।
तेरा ऋण कैसे चुकाऊं ?

योगेश्वर श्रीकृष्ण

मेरे देश के नौजवानो विचारो । इधर कौम के नौनिहालो निहारो
करो गर्व से गान मिल कर तराना ।
करो ध्यान से याद बीता जमाना ॥
उठो लाल जाति के आंखें उघारो –

कभी भूल कर राम को याद करलो। कभी कृष्ण के प्यार से दिलको भरलो
उठो प्रीत की रीत को फिर प्रचारो -

सुदामा कृष्ण से पुनः मीत लाओ। वही शुद्ध फिर भाव जग के जगाओ
विषैली स्थिति विश्व की फिर सुधारो -

सरलता का यह पाठ किस ने पढाया। विदुर घर बडे प्रेम से शाक खाया
यह गौरव कहानी न वीरो विसारो -

गुणी विप्र जन के चरण कृष्ण धोये। दशा देख कर वह सुदामा की रोये
इन्हीं सद्‌गुणों को सभी वीर धारो -

उदण्डी पाखण्डी लवारों को दल दो। सभी जाति घाती व पापी कुचल दो
उठो सब दुराचारियों को उखाडो -

मर्यादा पुरुषतोत्तम राम

तर्जः- पितु मात सहायक स्वामी सखा -

भारत के गौरव भूषण की हम पावन याद दिलाते हैं ।
तापों में पीडित दुनिया का जीवन पथ सरल बनाते हैं ।
क्यों आज पतित हैं पति हुये ? परिवार लुटा सब प्यार चुके ।
हम रामचंद्र के जीवन से जीवन का दीप जलाते हैं ॥

आचार्य श्याम पाल आर्य
आर्योति (दिलशाद गार्डन ३०)

भ्राता को भ्राता भाता न, वर दान यह नूतन युग का है।
हम राम भरत के भारत की गौरव से गाथा गाते हैं ॥
'उर मिला' नहीं अब कोई कहीं, न रहे कहीं अब 'यति' यहां।
कोई बात तभी तो बनती न, बातों मे बात बनाते हैं ॥
है कहाँ कुशल कौशल्या मां, जो माता के निर्माता हो।
वीरों के वंशज हम अच्छे, भूतों से बाल डराते हैं ॥
दलितों से प्यार नहीं करते, जय सीता राम कही तो क्या।
हम राम के काम विसार चुके, बस नाम का शोर मचाते हैं ॥
हम ईश व वेद भुला बैठे, गोधन को आज लुटा बैठे।
सब काम उलट कर 'जिज्ञासु' केवल जयघोष लगाते हैं ॥

मानवता का नाम

मानवता का मान दयानन्द, । दीन दुखी का त्राण दयानन्द ॥
जन हितकारी परोपकारी। है युग गौरव गान दयानन्द ॥
जिस ने की मृदु अमृत वर्षा। करते हैं विषपान दयानन्द ॥
हमें सुना गणराज की वीणा। दी जगहित में जान दयानन्द ॥
देते हैं निज घातक को भी। वाह! जीवन का दान दयानन्द ॥
संयम की है जीवित प्रतिमा। व्रतधारी बलवान दयानन्द ॥
मातृ शक्ति को शीश निवाकर। करते हैं सम्मान दयानन्द ॥
बनी विदुषी ललनायें भी। दूर किया अज्ञान दयानन्द ॥
तप करुणा की शुभ सौरभ का।
पावन है उद्यान दयानन्द ॥

आर्य